कथाकार संजीव का साक्षात्कार

'धार' उपन्यास की रचना दृष्टि और 'पांव तले की दूब' उपन्यास की रचना दृष्टि के बारे में आपकी क्या राय है ?

मैं बौद्धिक रूप से पूरी तरह से भावुक तो नहीं था ,लेकिन नक्सल मूवमेंट से मैं जुड़ा हुआ था उनके प्रति हमारी गहरी सहानुभूति थी। मैं उनकी लड़ाइयों, संघषों गतिविधियों को हमेशा अखबारों में छापता रहा ताकि उनका रास्ता साफ हो सके। मैं उनकी गोलबंदी नहीं बना रहा था, बल्कि उन्हें एक तरह से बचाने का प्रयास कर रहा था, उनको बचाने वाली भूमिकाए,जो मेरी तरफ से हो सकती थी वो मैंने अदा की अपनी लेखनी के चलते मुझे एक दो बार पुलिस का सामना करना पड़ा। जहाँ तक उपन्यास धार की बात है तो मै कहना चाहुंगा कि 'धार' का तात्पर्य 'मनुष्य की तेज शक्ति' से है उस धार को कुंद करने की तमाम प्रतिगामी शक्तियां भी होती है ,वह मनुष्य के अंदर भी ,अपनी कमजोरियों के कारण होती है और बाहर भी होती है। लेकिन आदमी अगर सही है तो वह अपने अंदर अपनी धार को कुंद नहीं होने देता ,इसी चीज को उपन्यास में मैंने, मैना के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया है, मैंने झारखण्ड के कोयलांचलों में कुछ ऐसी महिलाए देखी थी जो बहुत ही बोल्ड थी। इन महिलाओं का जीवन बहुत ही जुझारू था गोदान की 'धनिया' का क्षेत्र उत्तर प्रदेश का अवध अंचल है, गोदान की धनिया होरी से ज्यादा बोल्ड थी ,और बोल्डनेस की कोई सीमा भी नहीं होती,धार की मैना भी धनिया से किसी भी स्तर से कम नहीं थी धनिया का संघर्ष सामाजिकता का संघर्ष था, जबकि मैना का संघर्ष मल्टीफ़ोल्ड था धनिया के संघर्ष से मैना का संघर्ष मुझे ज्यादा कठिन लगा जब आप अपनों से लड़ते है, और खुद से लड़ते है मैना का पहला पति (फोकल) दलाल निकला उन शक्तियों का जो दिकू कहलाते हैं बाप

भी उन्ही शक्तियों के हाथो बिका हुआ है,जिस आदमी (मंगर) को वह साथ लाती है वह भी वर्णवादी मानसिकता से ग्रस्त हो गया कि हम तो सुनार है और तुम आदिवासी हो इस तरह उसका हर तरह से शोषण होता है वहाँ माफिया महेंदर बाबू सिंह जैसे लोग हावी है वो बोल्ड महिला जिसने मंगर को आदमी का दर्जा दिया बंदर कुत्ते से आदमी बनाया उसको छोडकर वही मंगर चला जाता है यहाँ तक की उसके मित्र शर्मा शर्मा ने समझाया की जाओ कुत्ते बिल्ली के पास सोने से ज्यादा अच्छा है आदमी के पास सोना इस तरह मैना बार बार अपने ही लोगों द्वारा छली गयी, पहला पति फ़ोकल, पिता टेंगर, दूसरा पति मंगर यहाँ तक की बेटी सितवा, मैना को अमान्य करके, दुत्कार के चली गयी । उसके पिता मर गए । पति को उसने कभी माफ नहीं किया और मंगर को छोड़ दिया । इस तरह हमें यहाँ एक ऐसी नारी का सृजन करना था जो की पहले की तमाम नारियों से जो मेरे लिए आदर्श थी जैसे एमिली जोला की “जंगल की मावेरी” जो बहुत बोल्ड थी और गोदान की धनिया मेरे लिए सशक्त महिलाए थी तो मैंने देखा की जीवन के केवल उतने ही आयाम नहीं होते है जितने की माहेरी और धनिया के है ।मैना जो दिन - प्रतिदिन अकेली होती जा रही है समाज द्वारा तिरस्कृत हो गई है इतना ही नहीं वह जान गुरु ओझा द्वारा डायन भी घोषित कर देने के बावजूद भी लड़ती रही, इतनी प्रतिकूल परिस्थितिओं में मुझे उसे आगे ले जाना था क्योकि मेरे आंदोलन को, मन को, मेधा और आत्मबल को, तोड़ने वाली शक्तियां बहुत ज्यादा थी । इन कारणों से मुझे एक ऐसे पात्र को खड़े करने की जरूरत थी और ये बिल्कुल हवा हवाई बात नहीं थी इसके मेरे पास पुख्ता आधार भी थे और जन खदान भी थी, इन परिस्थितिओं में मुझे एक ऐसे ही पात्र को खड़ा करने जरूरत थी, पता नहीं मैंने उसको कितना तक बना पाया और कहा तक,नहीं

<u>पाँव तले की दूब की रचना दृष्टी</u>

मैं नक्सल बाड़ी आंदोलन से जुड़ा हुआ था ,जिसमें झारखंड आंदोलन भी शामिल था यहाँ झारखंड आंदोलन मे, नक्सलबाड़ी शिबूसोरेन का आंदोलन ,एक एनसीसी की तरह से

नक्सल बाड़ी आंदोलन को ''ए के राय ''देखते थे इसमें सूरज मंडल ज्यादा चालाक थे और शिबूसोरेन मे जो आग पहले थी बाद मे निष्क्रिय हो गयी एक और सूरज मंडल था जो ज्यादा भ्रष्ट था ,शिबूसोरेन बाद में उतने ज्यादा ईमानदार नहीं रह गए शिबूसोरेन मार्क्सवादी नहीं थे ,इनमें मार्क्सवादी 'ए के राय' थे । मै और मेरे कई साथी इन आन्दोलनों से जुड़े हुए थे, मेरे मित्र गोरखपाण्डेय थे,जो काफी तेजस्वी भी थे ,किस तरह से आंदोलन का जो सच्चा वाहक होता है उसके मार्ग में रुकावटें होती है, जिसके लिए वह इतना जुझारू संघर्ष कर रहा है वही लोग उसके विरोध में आते है मैना में भी यही देखा गया है यह एक प्रकार की प्रवृत्ति होती है ये चीजे मैंने बार-बार महसूस की थी, हो सकता है यह मेरा टैगू हो कि जिसके लिए हम लड़ रहे है वह हमारे खिलाफ हो जाये ।इन संघर्षों में व्यक्ति या तो लड़ते लड़ते मर जाये या फिर आत्महत्या कर ले 'पाँव तले कि दूब में' एक व्यक्ति लड़ते लड़ते आत्महत्या कर लेता है ,जबकि धार में मैना संघर्ष करते करते मर जाती है मेरे ये पात्र कही आसमान से टपके नहीं थे ,बल्कि इसी धरती के थे । पाँव तले कि दूब में सुदीप्त (गोरख पाण्डेय)जिसका एक और नाम सुदामा पाण्डेय भी है एकदम माडर्न ग्रुप के थे उनकी स्टार्टिंग माडेर्न थी, 'जे एन यू' में उनका हॉस्टल की किसी लड़की के साथ आकर्षण था उन्हीं दिनों हिन्दी का कोई कहानीकार एक कहानी "राम सजीवन की प्रेम कथा" शीर्षक से लिखा उसको नए लड़के बहुत पसंद भी करते थे क्यों पसंद करते थे, खैर ये उनकी पसंद है ,ये कहानी मुझे बहुत खराब लगी, क्योंकि ये गोरख पाण्डेय पर थी और किसी भी आदमी को कंडेम करना, ये मेरा मन नहीं करता। मैं जबाब स्वरूप इसी चीज को केंद्र में रखते हुए, यह उपन्यास लिखा। मैनें देखा की इसी चीज को लेकर किस तरीके से सहानुभूतिपरक लेखन किया जा सकता है जो मैंने किया। मैंने नायक को ध्वस्त भी नहीं किया और महान भी नहीं बनाया। सुदीप्त कई शक्तियों से लड़ता है और लड़ते - लड़ते घोर निराशा में डूब जाता है, जिनके लिए वह लड़ता है उनकी सहानभूति भी नहीं प्राप्त कर पाता ।

प्रयोग के स्तर पर भी यह उपन्यास एकदम नया है। उपन्यासों में इस तरह का लेखन मैंने बहुत कम किया है। एक वातावरण निर्मित करने के लिए मैंनें कई सारे नए बिम्बों,

प्रतीकों और उपमानों का सहारा लिया। सू सू सिस्कारती हुई रात की हवाएं, काली अंधेरी रात, गाड़ी और उसके पीछे जलाता सुर्ख अंगारा, गुफा, तालाब ,दैत्याकार पहाड़ियाँ यह सारी संगठना ही उपन्यास की ऐसी थी। हर बंद ताला आगे के ताला की ओर इशारा करता है। कंकड़ीओं की बौछार ठंडी लग रही थी, बारिश हो रही है, एक पत्थर हिलाया जाता है, कागज का एक बण्डल मिलता है उसके कुछ पृष्ठ गायब थे। ठीक वैसे ही जैसे सुदीप्त की जिन्दगी के कुछ पृष्ठ गायब थे । सुदीप्त तुमने आत्महत्या कर ली,तो कंकाल भी जबाब देता है कि तुमने भी तो आत्महत्या की थी,यह सब औपन्यासिक संरचना को बनाने के लिए मैंने ऐसा किया। यह उपन्यास कई स्तरों पर एक्सपेरिमेंटल है । भाषा के स्तर पर भी, शिल्प के स्तर पर भी। ऐसी सुन्दर भाषा का प्रयोग मैनें बहुत कम उपन्यासों में किया है। गोरख पाण्डेय मेरे परम मित्र भी थे और शायद मुझसे एकाध वर्ष छोटे भी थे। हमेशा हमसे लड़ते झगड़ते और चिढ़े रहते थे। जन संस्कृति मंच के संस्थापकों में हम लोग थे। लेकिन हम किसी विशेष पार्टी के नहीं थे। मैं चुपचाप काम करने वालों में से था। चाहे कोई भी पार्टी हो जो जनता के लिए लड़ रही हो मैं उसकी सहायता करता था और कभी-कभी बहुत ज्यादा खतरे भी मोल ले लिया करता था । एक बार इसी तरह की एक घटना घटी। माओंवादियों ने बाबू महेंद्र प्रताप सिंह को मार दिया। बाद में मारने वाले को भी मार दिया गया। महेंद्र प्रताप सिंह मेरे घर हमेशा आये करते थे।

3 - क्या एक रचनाकार अपनी रचनाओं से भी प्रेरणा ग्रहण करता है ?

जब जब मै खुद को कमजोर समझने लगा 'आई एम् हेल्पनेस' तो मैं अपने को सँभालने के लिए 'धावक' और 'आरोहण' कहानियां पढता हूँ जो मुझे काफी उर्जा प्रदान करती है यह बात जो मै आपको बता रहा हूँ ,यह शायद बहुत कम लोगो को मालुम होगी ,कही मेरा मनोबल डगमगा न जाए, इसलिए इन दोनों की रचना मैंने की, इन्ही के बरख्स 'धार' व 'पाँव तले की दूब' उपन्यास को भी मैंने अपने को संभालने के लिए लिखा, की कही मेरी भी धार, ना कुंद हो जाये। धावक कहानी को पढ़कर मुझे असीम उर्जा की अनूभूति होती है, जब -जब भी मै निराश और असफल होता हूँ तब तब मैं इन सबको

पढता हूँ ।

4 -उपन्यास जैसी साहित्यिक विधा के लिए शोध कार्य को आप कितना महत्वपूर्ण मानते है?क्या शोध का कार्य किसी कृति की साहित्यिकता को कम कर देता है ?

उपन्यास एक कला है और शोध, एक उसके संदर्भ में पूरे तथ्य को जानना है शोध इसलिए आवश्यक है कि जब तक हम शोध नहीं करते तब तक हम बहुत गलतियां (टेक्नीकल और तथ्यात्मक) करते है । मै ऐसी गलतियों से हमेशा बचता रहता हू तथ्यों को मै कला रूप में रूपांतरित करता आया हू यह एक कौसल है जो मै जिन्दगी भर करता आया हूँ । शोध कार्य किसी कृति की साहित्यिकता को कर देता है ऐसा नहीं है बल्कि शोध कार्य कृति की प्रमाणिकता को पुष्ट करता है आज का दौर और आज की परिस्थितियां गुल खिलाने और गुदगुदाने की नहीं रह गई है ,आज यथार्थ को वैज्ञानिक तरीके से व्यक्त करना ही समय और परिस्थितियो की माँग है ।

5 -कल्पना और यथार्थ के दौर में आप शोध परक उपन्यास लिख रहे थे ? ऐसे में आपको किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?

शोध मेरी जिन्दगी का साधन है ,एक मकसद भी, जिस चीज को मैं लिखता हूँ उसकी सच्चाई को ,संदर्भो को ,जितना ज्यादा से ज्यादा जान सकूँ उसके लिए सतत प्रयास करता रहता हूँ ,इसके बिना जो रचनात्मक कांफिडेंस होता है वह नहीं हो पाता और दूसरी वजह यह कि मै साइंस का स्टूडेंट था वहां शोध की एक लम्बी व जरुरी प्रक्रिया होती है ,यही तथ्य मेरी हर रचना से जुड़ा होता है । मैंने जितने भी उपन्यास लिखें है सब एक कठिन शोध के ही परिणाम है ,क्षेत्रो में जाना वहां उठना ,रहना सहना ,घुल -मिल जाना और इससे एक आंतरिक भावना को समझना काफी कठिन कार्य होता है पर यह सब मैंने किया ।

6 -भूमंडलीकरण के दौर में तमाम पूंजीवादी ताकतें सत्ता शासन का प्रयोग कर आदिवासियों के जल जंगल जमीन पर कब्ज़ा कर रही है आप इसे किस दृष्टिकोण से देखते हैं ?

रचनाकार रचना के माध्यम से जो कह चुका है, उसको और कहने की जरुरत नहीं है। मैंनें इस पर बहुत सारी कहानियाँ लिखीं हैं। हत्या, हत्यारे, जूठी एक तेतरी दादी आदि इसी तरह की कई कहानियाँ लिखीं हैं। मैनें इस पर लगातार लिखा है। काफी कहानियाँ मेरी इन्हीं तथ्यों को केंद्र में रखकर लिखी गई हैं। जल-जंगल-जमीन की लूट में और उसके प्रतिरोध में जो शक्तियां खड़ी होती हैं उसका यथार्थ रूप मेरी कहानियों में दिखाई पड़ता है।

7 - जिस क्षेत्र को आधार बनाकर आप ने 'धार' और 'पांव तले की दूब' उपन्यास लिखा है, आज 15 -20 वर्ष बाद वहां की स्थितियां कैसी हैं?

परिस्थितियां तो खैर निश्चित रूप से बदलती रहती हैं, तब 'इनलीगल मईनिंग' का दौर था, जब धार उपन्यास लिखा गया था। अब इनलीगल माईनिंग की जगह सरकार खुद आ गई है। ओपन कास्ट कराती है, लेकिन इनलीगल मईनिंग अभी भी अवाध रूप से चल रही है, फिर भी इसके बावजूद चीजें एक खास समय की उपज होती हैं, संदर्भ बदल जाते हैं, तो चीजें तो वहीँ रह जाती है। थोड़ा-थोड़ा भविष्य उसमें झांकता रह जाता है। पूरी तरह भविष्य को उसके आधार पर आंकना बहुत मुश्किल है, जबकी जन खदान भी नहीं है। पांव तले की दूब का सुदीप्त मारा जा चुका है। किसी किसी आदिवासी गाँव को बड़े-बड़े उद्योंगपति, टाटा और अन्य कंपनियों ने खरीद लिया है और झारखण्ड आन्दोलन भी कहने मात्र को सफल रहा क्योंकि राज्य तो अलग बन गया लेकिन चीजें तो जैसे पहली थी ,वैसे ही आज भी बरकरार है। मनुष्य की नियति बहुत ज्यादा नहीं बदली, बदलनी चाहिए थी लेकिन क्यों नहीं बदली इसके संकेत इन उपन्यासों में है कि किन हाथों में जाएगी यह सत्ता, किन हाथों में ये परिस्थितियां जाएँगी इसका संकेत भी इस उपन्यास में दिया गया है इसीलिए अब वहां कोई सार्थक परिवर्तन हुआ हो, ऐसा हम

नहीं कह सकते। एम पी में आज करीब 40 विधायक आदिवासियों के हैं, झारखण्ड में भी कई विधायक आदिवासियों के हैं लेकिन कोई परिवर्तन नहीं दिखाई देता, ओ क्या एक गीत है न कि ' **एक ऋतु आई एक ऋतु जाई, मौसम बदले न बदले नसीब।'** लगभग ऐसी ही स्थितियां वहां मुंह बाये खड़ी है। इतना होने पर भी संघर्ष करने वाली शक्तियां जिसका मैना एक चरित्र मात्र है वहां खड़ी है। मैना संघर्ष करती है किन्तु पूंजीपतियों व सत्ताधारियों द्वारा रोलर से दबा दी जाती है, किन्तु इतने मात्र से संघर्ष की परम्परा कभी ख़त्म नहीं होती है। एक मैना समाप्त होती है तो दूसरी मैना सामने आकर खड़ी हो जाती है।

8 -परम्परावादी उपन्यासों से हटकर आपने 'रह गईं दिशाएं इसी पर' जैसा वैज्ञानिक उपन्यास लिखा, इसकी प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

यथार्थ को अलग अलग कोणों से पकड़ने की इच्छा हर नए लेखक या नये ढ़ंग की सोच वाले लेखक में होती है। पारंपरिक लीक से हटकर सोचने की इच्छा, तीसरी बात यह थी की मैं वैज्ञानिक कर्म में जुटा रहा, इसलिए मेरा ट्रेड भी वही रहा कि हर वस्तु को दूसरे ढ़ंग से देखा जाय तो क्या होगा, तीसरे ढ़ंग से देखा जाय तो क्या होगा। जैसे उसके पहले मैं देखा की जब राकेश शर्मा अंतरिक्ष से लौटकर जमीं पर आये तो इंदिरा गांधी ने उनसे पूछा की अंतरीक्ष से भारत कैसा दिखाई पड़ता है तो इस तरह के तमाम वैज्ञानिक तथ्यों पर, मैं अक्सर सोचा करता था और ऐसे ही वैज्ञानिक तथ्यों का उल्लेख मैनें अपनी कहानी 'काउंट डाउन' में भी किया है जो इंडिया टुडे में प्रकाशित हुई थी। बिना विज्ञान के नए तथ्यों की खोज करना संभव नहीं है। पारम्परिक भाववादी तरीकों, रास्तों से हम वास्तविक सत्य तक नहीं पहुच सकते एक भाववादी सत्य तक भले ही पहुँच जाएं। ईश्वर जब तक जिन्दा है, माने रहे या ना माने रहे ,मेरे साथ यह रहा की मैं जीवन के और जगत के जो सत्य है उनको पारम्परिक ढ़ंग से न देखकर दूसरे ढ़ंग से या गैर पारम्परिक ढ़ंग से देखने की कोशिस की । इस समय तो जो कुछ- कुछ नये आविष्कार होते रहें और पिछले दस सालों में जो युगांतकारी प्रयोग हुए जैसे व्रह्मांड की उत्पत्ति कैसे हुई, पृथ्वी की उत्पत्ति कैसे हुई, सेक्स चेंज, जैसे जैविकीय आविष्कार हुए,

कि एक कण से ही पूरा ब्रह्मांड है। जैसे हम जहाँ हैं वही पृथ्वी का केंद्र है। ये सब जो परिकल्पनाएं हैं वो पहले नहीं थी। और मैं जिज्ञासु प्रवित्त का, वैज्ञानिक कर्म में रहने वाला व्यक्ति था। एवं नए ढ़ंग की सोच वाली मानसिकता थी, इन तमाम मानसिकताओं ने मुझे प्रेरित किया कि मैं जीवन को और जगत को अपने सम्पूर्ण आयाम में देखूं। सारे प्रश्न जो मुझे विचलित कर रहे थे जो हमारे सामने आने वाले हैं, जिनके कदमों की आहट हमें धीरे- धीरे सुनाई देने लगी है उन सब पर विचार करूँ। चूँकि मैं कथाकार हूँ इसलिए कहानी मेरा माध्यम हो सकती है या उपन्यास या कथा। इसी के तहत मैनें यह उपन्यास, जो मेरे बचपन से आज तक की एक जिज्ञासा की यात्रा है उसी का प्रतिफलन है। एक तरह से इस उपन्यास में सवाल ही सवाल हैं जबाब नहीं हैं और कुछ ऐसे सवाल हैं जो हमें दिखाई नहीं पड़ रहे हैं, किन्तु आ रहे हैं। इस उपन्यास को मुझे लिखते - लिखते करीब, तीस वर्ष बीत गए, मैं जिस समय इस उपन्यास में 'सेक्स चेंज' जैसी बात कही थी उस समय ऐसी कोई बात सामने नहीं आई थी । आश्चर्य की बात है कि लिखने के तुरंत बाद ऐसा भूचाल आ गया।

'थर्ड जेंडर' दुर्गापुर के शांतिकेतन में हमारे एक मित्र प्रोफ़ेसर है जो सेक्स चेंज करवाके पुरुष से स्त्री बने थे, जिनका आस्था टी.वी. चैनल ने बाकायदा इंटरव्यू भी लिया था तो ये सब समस्याएं पहले नहीं थी । संस्कार भी उस तरह के, ऐसे नहीं थे, कि होमोसेक्स, गेय को अधिकार दिया जाये,पहले तो ये सब गालियां थी ये सारी चीजें मान्यताओं में बदल गयीं, क्लोनिंग सिस्टम में भी, पहले एक बाप बेटी को पैदा करता आया है जो स्पर्म आदि का मामला है, लेकिन अब क्लोनिंग सिस्टम में जब वो लड़की लारा (पात्र) कहती है की "क्या बेटी पैदा करेगी बाप को" ये जो स्थिति है विचित्र लग सकती है लेकिन यह हकीकत है । अब तक हम ऐसी स्थिति से भागते रहे हैं लेकिन विज्ञान ने इसे प्रमाणित कर दिया है अब हम इससे भाग नहीं सकते है । तो यह सब तमाम ऐसी बातें एवं तमाम ऐसे तथ्य थे जिसने मुझे बाध्य किया और उसकी सकारात्मक अभिव्यक्ति मैंने "रह गई दिशाएं इसी पार"में दी है ।

9- आपके उपन्यास "धार" के संदर्भ में प्रसिद्ध आलोचक वीर भारत तलवार का कहना है कि उसकी भाषा क्षेत्रीयता के हिसाब से असंगत है ? आपकी क्या राय है ?

वीर भारत तलवार जी क्या कहेंगे ,वो तो बड़े आलोचक है, मैं अपनी भाषा की अक्षमता को खुद स्वीकार करता हूँ कि कथाकार या लेखक जो भाषा प्रयोग करता है एक भाषा होती है, जो हमारे पात्र होते है वह एक भाषा का प्रयोग करते है और जो पाठक होता है उसके बोध का स्तर अलग होता है, हमको उसका आभास कराते हुए एक भाषा का चयन करना पड़ता है यह भाषा कभी कभी नकली भी लग सकती है अगर हम टोटली वही भाषा लिख दें तो धार उपन्यास में लगभग हजारों हिंदी की बोलियाँ आ जाएंगी जिनका अर्थ कोई नहीं समझ पाएगा राजस्थानी, हिंदी, बिहारी, संथाली आदि कई ऐसी भाषाएँ है जिसे पाठक नहीं समझ सकते है, पाठक हमारे लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते है,उनको केंद्र में रखकर ही हमारी रचना प्रक्रिया संपन्न होती है।दूसरी चीज़ उपन्यास परकता को भी उपन्यासों में देना पड़ता ।